

# Story of Shri Krishna and Arjuna (Guru-Shishya Story)

## Guru Purnima Stories

कुरुक्षेत्र के युद्धभूमि में , महाभारत के महान संघर्ष के मध्य में , महान योद्धा अर्जुन एक गहन नैतिक संकट में फंस जाते हैं। जब वह युद्ध के लिए तैयार होते हैं , तो उनके ही परिवार , प्रिय सहयोगी और मित्रों को प्रतिक्रिया में देखते हैं। यह अवतार कि अब जो रक्तपात और विनाश होने वाला है , उसे गहन दुःख और भ्रम में डाल देता है। उनके हृदय में संदेह का भारी बोझ होता है , और वे अपने योद्धा धर्म पर प्रश्न उठाने वाले होते हैं। अर्जुन के इस निराशा को देखकर , उनके सारथी और दिव्य दिशानिर्देश श्रीकृष्ण आगे आते हैं और उन्हें शांति एवं ज्ञान प्रदान करते हैं। इस महान युद्धभूमि के मध्य में , श्रीकृष्ण भगवद गीता का उपदेश देते हैं , जो जीवन , कर्तव्य और धर्म के विषय में एक शाश्वत ग्रन्थ है।

अपने गहन आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि से , वे श्रीकृष्ण के शरीर की नश्वरता और आत्मा की अनंतता की व्याख्या करते हैं , और अर्जुन को अपने व्यक्तिगत जुड़ावों से ऊपर उठकर अपने क्षत्रिय धर्म का पालन करने के लिए प्रेरित करते हैं। वह अर्जुन को निस्वार्थ कर्म का उपदेश देते हैं , उन्हें परे जाकर कर्तव्य का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं , और व्यापक दिव्य योजना को मेहनत की शिक्षा देते हैं। श्रीकृष्ण के शब्द केवल दार्शनिक विचार नहीं होते ; वे अर्जुन के आंतरिक संकट को दृढ़ संकल्प में संशोधित करने के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शन होते हैं। प्रत्येक श्लोक के साथ , श्रीकृष्ण भ्रम का पर्दा डालते हैं , और उसके स्थान पर दृढ़ता , साहस और उन्नति प्रदान करते हैं।

उनके संवाद के अंत तक , अर्जुन की मानसिकता पूरी तरह से बदल जाती है। उन्हें अपने धनुष को उठाने और युद्ध करने की शक्ति और दृढ़ विश्वास मिलता है , न कि व्यक्तिगत महिमा या प्रतिशोध के लिए , बल्कि धर्म और न्याय को बहाल करने के लिए। श्रीकृष्ण का मार्गदर्शन केवल सूचना से परे होता है ; यह एक गहन आध्यात्मिक जागृति है जो अर्जुन के जीवन और उनकी भूमिका की समझ को पुनर्परिभाषित करती है। इस दिव्य संवाद के माध्यम से , अर्जुन अपने कर्तव्य को अटल विश्वास और आंतरिक शांति के साथ पूरा करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

---